● सुनो और साभिनय गाओ :

२. हवा

झूम-झूमकर, नाच-नाचकर,
कलियों संग इठलाती है ।

हलकी-फुलकी, नटखट, चंचल,
सबके घर घुस जाती है ।

ठुमक-ठुमककर, मटक-मटककर,
नदी-लहर संग बल खाती है ।

जंगल, पर्वत, खेत, गाँव में,
गीत नए लिख जाती है ।

चिड़ियों के नन्हे बच्चों को,
गोद लिए दुलराती है ।

सुबह-सवेरे, तड़के-तड़के,
आकर हमें जगाती है ।

– केदारनाथ 'कोमल'

१. कविता में आए लयात्मक शब्दों को ढूँढ़कर सुनाओ ।

२. शब्दयुग्म सुनो, समझो और दोहराओ :

हलकी-फुलकी, तड़के-तड़के, घर-द्‌वार, नदी-नाले, खेत-खलिहान, गाँव-शहर, कली-वली ।

❑ पूरी कविता उचित हाव-भाव, लय, गति, उच्चारण के साथ सुनाएँ । दो-दो पंक्तियाँ सुनाकर विद्‌यार्थियों से दोहरवाएँ । कविता का गुट एवं एकल रूप में पाठ करवाएँ और प्रश्नोत्तर द्‌वारा समझाएँ । पूर्व परिचित अन्य कविता विद्‌यार्थियों से कहलवाएँ ।